ग्रन्थ में उद्धृत छन्द : एक दृष्टि में

क्रम संख्या	छन्द का नाम	वर्णों की संख्या	लक्षण	गण-व्यवस्था	यति
1	**अनुष्टुप्**	8	पञ्चमं लघु सर्वेषु सप्तमं द्विचतुर्थयोः। गुरु षष्ठं च सर्वेषामेतच्छ्लोकस्य लक्षणम्।।	चारों पादों में पाँचवा और द्वितीय तथा चतुर्थ पाद में सातवा अक्षर लघु, चारों पादों का षष्ठ अक्षर गुरु	.....
2	**इन्द्रवज्रा**	11	तकाराभ्यां जकारेण युक्तं गुरुयुगेण च। इन्द्रवज्राभिधं प्राहुर्वृत्तमेकादशाक्षरम्।।	तगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु	.....
3	**उपेन्द्रवज्रा**	11	जतजैर्गुरुयुग्मेन संसक्तैरुपलक्षितम्। वदन्त्युपेन्द्रवज्राख्यं वृत्तमेकादशाक्षरम्।।	जगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु	.....
4	**उपजाति**	11	पदान्तरविन्यासयोगैर्बहुभिरेतयोः। वैचित्र्यजातिरुचिरा भवन्त्येवोपजातयः	.....	.....
5	**शालिनी**	11	पूर्वाक्षरचतुष्कान्तविरतिर्मततान्विता। गुरुद्वितययुक्ता च शालिन्येकादशाक्षरा।।	मगण, तगण, तगण, ग़ुरु, गुरु	प्रत्येक पाद के प्रथम चार अक्षर के बाद
6	**वंशस्थ**	12	संलक्षितं जतजरैर्द्वादशाक्षरमक्षरैः। छन्दोविचक्षणा वृत्तं वंशस्थाख्यं प्रचक्षते।।	जगण, तगण, जगण, रगण	.....
7	**द्रुतविलम्बित**	12	अभिव्यक्तं नभभरैरक्षरैर्द्वादशाक्षरम्। वदन्ति वृत्तजातिज्ञा वृत्तं द्रुतविलम्बितम्।।	नगण, भगण, भगण, रगण	.....
8	**वसन्ततिलकम्**	14	अभिज्ञातं तभजजैरन्तासक्तगुरुद्वयम्। चतुर्दशाक्षरं वृत्तं वसन्ततिलकं विदुः।।	तगण, भगण, जगण, जगण, गुरु, गुरु	.....
9	**मालिनी**	15	अष्टाक्षरविरामेण युक्ता ननमयैः सयैः। वदन्ति मालिनीनाम वृत्तं पञ्चदशाक्षरम्।।	नगण, नगण, मगण, यगण, यगण	प्रत्येक पाद के प्रथम आठ अक्षर के बाद

10	**हरिणी**	17	नसमै रसलैर्गेन युक्ता सप्तदशाक्षरा। विच्छिन्ना हरिणी षड्भिश्चतुर्भिः सप्तभिस्तथा।।	नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु, गुरु	छह, चार तथा सात वर्णों पर
11	**शिखरिणी**	17	यमनैः सभलैर्गेन युक्ता सप्तदशाक्षरा। षडेकादशविच्छेदवती शिखरिणी मता।।	यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु, गुरु	छह तथा ग्यारह वर्णों पर
12	**मन्दाक्रान्ता**	17	चतु:षट्सप्तविरतिर्वृत्तं सप्तदशाक्षरम्। मन्दाक्रान्ता मभनतैस्तगगैश्चाभिधीयते।।	मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, ग़ुरु, ग़ुरु	चार, छह तथा सात वर्णों पर
13	**शार्दूलविक्रीडित**	19	मसजैः सततैर्गेन युक्तमेकोनविंशवत्। शार्दूलक्रीडितं प्राहुश्छिन्नं द्वादशसप्तभिः।।	मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण, गुरु	बारह तथा सात वर्णों पर
14	**स्रग्धरा**	21	युक्तं मरभनैर्यैश्च त्रिभिः सप्ताक्षरैस्त्रिभिः। छेदैश्च स्रग्धरावृत्तमेकविंशाक्षरं विदुः।।	मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण	प्रत्येक सात अक्षरों पर तीन बार विराम